Impact Factor-6.261

ISSN: [illegible]143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019

SPECIAL ISSUE

इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

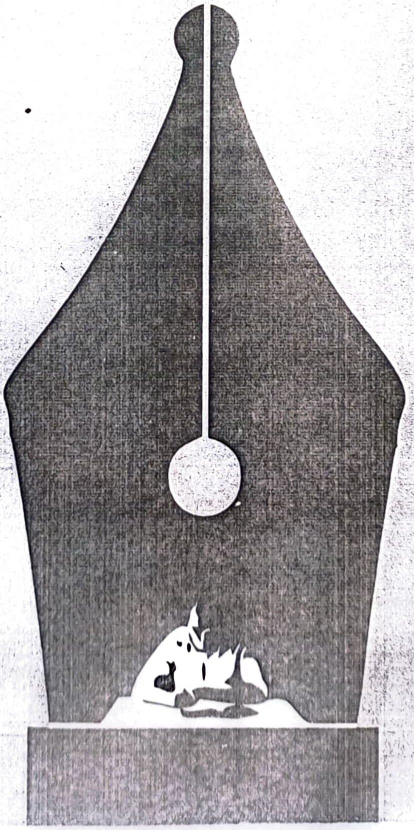

Guest Editor

Dr.P.K.Koparde
Dr.V.V.Arya

Chief Editor

Dr.Dhanraj T.Dhangar
Assist.Prof.(Marathi)
MGV'S Arts & Commerce
College, Yeola, Dist.Nashik (M.S.)

Impact Factor - 6.261 ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019 Special Issue -2

इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

Guest Editor:
Dr.Prakash K. Koparde
Dr. V.V.Arya
Dept.Of Hindi,
Vaidhnath College, Parli-Vaijnath, Dist. Beed

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi),
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 800/-

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue -2- इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर
ISSN : 2348-7143
February-2019

16	सुशीला टाकभौरे की कविताओं में 'स्त्री-विमर्श'	प्रा. शिवाजी रामजी राठोड - गावीत गंकेश गजु	48
17	निम्नवर्गीय स्त्री जीवन की संघर्ष गाथा : रुदाली	- प्रा.रामहरी काकडे	50
18	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में नारी का.....	–डॉ. पुष्पलता अग्रवाल	52
19	'नारी संवेदना के विविध स्वर'(स्त्री आत्मकथ...	– डॉ. अलका नारायण गडकरी	55
20	'क्याप' और 'नीलधारा' उपन्यास में चित्रित ---	_ ज़ेनब खान	58
21	गिलिगडु उपन्यास में अभिव्यक्त समस्याओं....	– सावते प्रकाश नवनितराव	61
22	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में स्त्री -----	_ बनजा तालदी	63
23	उपेक्षीत वर्ग 'तृतीय पंथी' और डॉ. ...	–प्रा.सोनकाम्बले पद्मानंद पिराजीराव	66
24	नयी सदी की हिन्दी ग़ज़ल में राजनीतिक चेतना	- डॉ. मृणाल शिवाजीराव गोरे	68
25	दोहरा अभिशाप दलित आत्मकथा में स्त्री----	_डॉ.खंदारे चंदू	72
26	इक्कीसवीं सदी की कविता	–डॉ.राम सदाशिव बडे	74
27	पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा : किन्नर......	–डॉ. रमेश संभाजी कुरे	76
28	उदय प्रकाष की कविता में वर्ग–संघर्ष	– डॉ. के. वी. गंगणे	79
29	इक्कीसवीं सदी के कहानियों में सामाजिक....	– डॉ. ख़ाज़ी एम. के.	81
30	सुषीला टाकभौरे की कविता में संवेदना...	–कु. सरवदे संगिता तुकाराम	84
31	इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता में......	– प्रा.डॉ.चित्रा धामणे	87
32	समकालीन कविताओं में स्त्री जीवन का यथार्थ	_ सिराज	89
33	"कथा साहित्य में चित्रित स्त्री विमर्श"	– योगेश राणुजी कोरटकर	93
34	प्रभा खेतान के कथा–साहित्य में नारी विमर्श	– कु. मनशेट्टी लक्ष्मी	95
35	"चंद्रकांत देवताले का 'पत्थर फेंक रहा हुँ' कविता	–सुधाकर दगडू वाघमारे	98
36	"मृदुला सिन्हा के साहित्य में सामाजिक पक्ष एवं	–जोशी अश्विनी भुजंग	101
37	21 वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में मुस्लिम नारी	-अफ़रोसे सुल्ताना	104

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue -2- इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर
ISSN : 2348-7143
February-2019

निम्नवर्गीय स्त्री जीवन की संघर्ष गाथा : रुदाली

प्रा.रामहरी काकडे
(सहायक प्राध्यापक एवं विभाग प्रमुख)
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी, तहसील-गेवराई जिला-बीड

स्त्री समाज की आधी आवादी है।कोई भी समाज या राष्ट्र स्त्री-शक्ति को अपमानित करके समृद्ध नहीं हो सकता। क्योंकि हर समाज या राष्ट्र के नागरिकों को संस्कारित करने का कार्य माँ के रूप में सर्वप्रथम एक स्त्री ही करती है। " 'प्राथमिक शिक्षक' शब्द को सर्वप्रथम महिलाओं के लिए प्रयोग में लाया जाना चाहिए, क्योंकि 6 से 7 वर्ष से कम आयु वाले बच्चों के लिए तो असल में वहीं प्राथमिक शिक्षक है "1 इसके प्रमाण मिलते हैं कि वैदिक काल में स्त्री की स्थिति काफी उन्नत थी।मनुवादी सोच ने स्त्री की स्थिति को बिगाड दिया।मध्यकाल में विदेशियों के आक्रमण से बचने के लिए स्त्री पर विभिन्न पावंदियां लगाई गई।भारत पर अंग्रेजी शासनकाल से भारतीय स्त्रियों की स्थिति में सुधार प्रारंभ हुआ।1975 ई.को 'अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष' घोषित करने से समूचे विश्व का लक्ष महिला प्रश्न पर केंद्रित हुआ।खासकर महिला सचेत होकर अपने बारे में लिखने लगी। वर्तमान समय में आधुनिक शिक्षा,मीडिया क्रांति एवं लोकतांत्रिक शासनप्रणाली के कारण वर्तमान स्त्री अपने अधिकार के प्रति अधिक जागरूक दिखाई देती है। साहित्य में स्त्री विमर्श इसी का परिणाम है।

साहित्य की अन्य विधाओं के समान नाट्यविधा में भी स्त्री को केंद्र में रखकर नाट्यलेखन हो रहा है।वरिष्ठ रंगकर्मी, अभिनेत्री एवं निर्देशक, कोलकाता की विख्यात नाट्यसंस्था ' रंगकर्मी ' की संस्थापक उषा गांगुली ने बाग्ला की प्रसिद्ध कथाकार महाश्वेता देवी की एक कथा पर आधारित नाटक 'रुदाली' का लेखन किया।जीसमें निम्नवर्गीय स्त्री जीवन के संघर्ष का चित्रण किया है।लेखिका ने नाटक के स्त्री पात्रों के माध्यम से स्त्री की सामाजिक - आर्थिक स्वतंत्रता,सामंतवादी - पुरुषवादी मानसिकता, स्त्री को एक वस्तु मानने की प्रवृत्ति का चित्रण किया है।नाटक में अधिकांश स्त्री पात्र ही हैं। मुख्य पात्र सनीचरी निम्नवर्गीय पात्र है।"नाटक का केंद्रीय चरित्र सनीचरी है।जिसे शनिवार के दिन पैदा होने के कारण यह नाम मिला है। और इसके साथ ही मिली हैं कुछ सजाएँ - समाज मानता है कि वह असगुनी है और इसलिए उसके परिवार में कोई नहीं बच पाया।"2

हमारे समाज में स्त्री पहले से ही शोषित है।अगर वह स्त्री दलित या निम्नवर्गीय हो तो यह समस्या और विकराल रुप धारण करती है।प्रस्तुत नाटक में सनीचरी और अन्य स्त्री पात्रों के माध्यम से निम्नवर्गीय स्त्री का एक साथ भाग्य, समाज तथा परिवार से संघर्ष का चित्रण किया है। सनीचरी इसका जिता जागता उदाहरण है।असलियत में सनीचरी एक कर्मठ, कर्तव्यपरायण औरत है।लेकिन वह नियति के आगे विवश है।उसका पति शिवाजी महाराज के चटावे का प्रसाद खाने से मर जाता है।उसके संघर्ष की कहानी यहीं से प्रारंभ होती है।पति के मृत्यु पश्चात् गॉव के ठाकुर और ब्राह्मण लोग उसे पति का क्रिया करम दो बार करवा लेते है।जिसका परिणाम होता है ऋण।"सनीचरी और नहीं तो का. गरीबन के भगवान ऐसे ही होते है।जानती है बिखनी,हमकों अकेला पाय के हमरा मरद का किरिया दुई- दुई वार करवाय लिया।

बिखनी:अच्छा सनीचरी : हॉ,टोहरी का पंडा हमें बोला यहा रह के पहिला पिंड देती जा।हम सवा रुपिया दखिना देके बालु अउर सन्तु का पिंड देई दिए।ई बात पर गांव के पंचायत मॉ खूब हल्ला हुआ।ऊ हरामी मोहनलाल बोला कि टोहरी का बिरामन को टहाड का किरिया करम कहा से आवेगा?ठोक दिया दूसरा किरिया हमरे उपर।सगरा गॉव के दही भात खिलाये रामोतार से करजा लेई के।"3 शोषण की यह परंपरा यही खत्म नहीं होती तो सनीचरी के बेटे के मृत्यु पर भी चक्की बेचकर उसे बेटे का क्रिया करम करने पडते है।जिस चक्की पर उसकी जिविका चल रही थी उसे ही बेचना पडता है।अपनी सत्ता एवं संपत्ति के प्रदर्शन के लिए उच्चवर्गीय लोग जो खर्चा करते है निम्नवर्गीय लोग उसी का अनुकरण कर आर्थिक संकट मोल लेते है।जिस व्यक्ति को जीवित रहते हुए कभी प्रेम नहीं दिया जाता उसी के मृत्यु पर लाखों रुपये खर्च किए जाते है।"बिजुआ:काहे नाही।देखना अब माधो सिंह का किरिया - करम

कितने ठाट - बाट से करता है।अढाई मन का चंदन का लकडी, असली घी,धुप सब आ चुका है।मालुम है सब रंडियों को रोने के लिये बुलाया है।"4 उच्च वर्ग में प्रचलित यह मान्यताएं कम मात्रा में ही क्यों न हो लेकिन गरिबों में प्रचलित होने से गरीबों की आर्थिक स्थिति पूर्णतः बिगड जाती है।खास कर अगर घर का पुरुष मर जाए तो औरत पर दोहरी मार पडती है।एक ओर क्रिया करम का खर्चा तो दूसरी ओर जीवन का अकेलापन।इसलिए औरत अपने भाग्य को ही कोसती है।"सनीचरी:न जाने कउन भाग लेके जनम लिये रहे।मरद न होय तो औरत का बहुत हाल होता है।"5 सनीचरी की बचपन की सहेली बिखनी की भी यही हालत है।उसके पति की मृत्यु के बाद उसका लडका घर की बकरियों को भगाकर अपने ससुराल में घर जमाई बनकर रहता है।औरत फिर वह कौन सी भी जात या वर्ग की क्यों न हो उसे कम अधिक मात्रा में यातनाएं तो भोगनी ही पडती है।उच्चवर्गीय ठकुराइन भी इससे मुक्त नहीं है।"ठकुराइन:हमरा कईसा हक? हम कउन इ खानदान का लिए बेटा जन दिए?लडकी को जनम देकर पाप जो किया हमने।"6 उच्चवर्गीय औरत का जो शोषण होता है वह चार दीवारों के अंदर होता है लेकिन निम्नवर्गीय औरत का शोषण खूले आम होता है।अपनी सत्ता और संपत्ति के बल पर उच्चवर्गीय लोग निम्नवर्गीय औरतों का लैंगिक शोषण करते हैं।"सनीचरी:हमसे पूछता है?जवान औरत जब लछमन सिंह के यहाँ काम पर जाती है, तो सीधे रंडी टोला में जा बैठती है।"7 परबतिया सनीचरी की बात न मानकर लछमन सिंह के यहाँ पर काम के लिए जाती है।घर में बीमार रहनेवाला पति और जवानी की उम्र।आखिर वही होता है जिसका डर सनीचरी को था।परबतिया अपने पति बुधुआ के मृत्यु के बाद तुरंत घर में रखे रुपये और सामान लेकर भाग जाती है।बहुत दिनों के बाद सनीचरी को मालूम होता है कि परबतिया रंडी टोली में है।यह वह रंडियाँ हैं जिसको लछमन सिंह ने अपनी हवस का शिकार बनाया है।इतना ही नही तो गंभीर सिंह के क्रिया करम में रोने के लिए जो वैश्याएँ बुलाई गई थीं। उसमें से गुलबदन पर लछमन सिंह की नजर जाती है।एक ओर गंभीर सिंह की लाश लोग स्मशान ले जा रहे थे तो दूसरी ओर लछमन सिंह और गुलबदन घर के अंदर जा रहे थे।इसप्रकार उच्चवर्गीय लोग निम्नवर्गीय स्त्री को जब चाहे तब अपने बिस्तर पर रोंदने के लिए तैयार रहते हैं।औरत कि यह यातनाएं जन्म से ही प्रारंभ होती है।अगर वह औरत निम्नवर्गीय हो तो उसे समय - समय पर अपमानित होना पडता हैं।सनीचरी एक इमानदार और कर्तव्यनिष्ठ औरत होकर भी निम्नवर्गीय होने के कारण उसे बार-बार अपमानित होना पडता है।"वैद:अठन्नी? हमकों भिखारी समझा है का? हमको अच्छी तरह से मालूम था ,तुम सब छोटी जातवाले ऐसे ही होते हो - आना कभी हमरे द्वार पर।डाइन कहीं की।"8 सनीचरी एक निम्नवर्गीय विधवा औरत होने के कारण उसे एक साथ कई समस्याओं का सामना करना पडता है। तीन-तीन विडंबनाओं के अतिरिक्त समाज उसे असगुनी मानता है।उसे आर्थिक एवं सामाजिक दोनों ओर अन्याय सहना पडता है। जिस पोते को अपनी मेहनत की कमाई से पोसकर बडा किया वही पोता जवान होते ही सनीचरी को छोडकर चला जाता है।जवान बेटे की मृत्यु अपने आँखो से देखनी पडती है।बेटे की मृत्यु के बाद ही बहुरिया घर से भाग जाती है।एकमात्र सहारा बनकर आनेवाली बचपन की सहेली बिखनी भी बीमारी से काल की भेंट चढ जाती है।

निष्कर्ष रुप में कह सकते है कि, सनीचरी एक निम्नवर्गीय विधवा औरत होने के कारण अपरिमित संघर्ष का शिकार बनती है।यह समाज उसे असगुनी मानकर उसके कर्मठ एवं ईमानदार व्यक्तित्व का अपमान करता है।उसे समाज और नियती दोनों भी प्रताडित करते हैं।धर्म - परंपरा के नाम पर उसका आर्थिक शोषण किया जाता है तो नियती एक-एक कर के पति, बेटा और सास को निगल लेती है।जवान पोता और बहू घर से भागकर उसे बूढापे में मरने के लिए छोडते हैं। एकमात्र आधार बनी बचपन की सहेली बिखनी को भी काल निगल लेता है।इतने संकटों के बावजूद न रोनेवाली सनीचरी अंत में रुदाली का काम करना पारंभ करती है।क्योंकि वह एक निम्नवर्गीय विधवा स्त्री है और हमारे समाज में उसकी यही नियति है।

1 foreardpress.in ई.वी.रामास्वामी का आलेख - 'पेरियार के इंकलाबी बोल।'

2 रुदाली - उषा गांगुली फ्लैप पर से

3 रुदाली - उषा गांगुली पृ.54-55

4 वही पृ.62   5 वही पृ.48   6 वही पृ.82   7 वही पृ.10   8 वही पृ.23